दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी

(सी.बी.सी. के राष्ट्रीय मानकों के अंतर्गत प्रत्यायित)

(आई.एस.ओ. 9001:2015 प्रमाणित)

आधारशिला

27वां संस्करण, जुलाई 2024

(हिंदी विशेषांक)

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड

डी.एम.आर.ए. द्वारा एन.बी.सी.सी. के अधिकारियों के लिए “कंक्रीट टेक्नोलॉजी” पर स्पेशलाइज्ड ट्रेनिंग का आयोजन किया गया

एन.बी.सी.सी. (इंडिया) लिमिटेड के 26 उप महाप्रबंधक से लेकर उप परियोजना प्रबंधक स्तर तक के अधिकारियों के लिए 11 से 13 मार्च, 2024 के दौरान “कंक्रीट टेक्नोलॉजी” पर एक रेजिडेंशियल मिड-करियर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में कंक्रीट टेक्नोलॉजी के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया, जिनमें सामग्री, डिज़ाइन मिक्स, कंक्रीट उत्पादन, रिइन्फोर्समेंट के विवरण, कंक्रीट पर होने वाले परीक्षण, वाटर प्रूफिंग, संरक्षा, आई.जी.बी.सी. एवं जी.आर.आई.एच.ए. रेटिंग सिस्टम इत्यादि शामिल थे।

प्रतिभागी अधिकारियों ने अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक/एन.बी.सी.सी. के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के दौरान और निदेशक परियोजना/एन.बी.सी.सी. के साथ व्यक्तिगत संपर्क के समय प्रशिक्षण के बारे में सराहना व्यक्त की।

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी ने रेल संरक्षा उपायुक्त के बैच के लिए मेट्रो रेल सिस्टम पर फैमिलियराइजेशन ट्रेनिंग का आयोजन किया।

डी.एम.आर.ए. में रेल संरक्षा उपायुक्त के बैच के लिए मेट्रो रेल सिस्टम पर 18 से 19 अप्रैल, 2024 तक दो दिवसीय फैमिलियराइजेशन ट्रेनिंग आयोजित किया गया। विभिन्न जोन से सात रेल संरक्षा उपायुक्त इस प्रशिक्षण में शामिल हुए। प्रतिभागियों को मेट्रो रेलवे में विभिन्न सिस्टम और इसकी कार्यप्रणाली के बारे में इस पाठ्यक्रम में जानकारी प्रदान की गई। प्रतिभागियों ने बेहतर तरीके से संचालित इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की और भविष्य में भी इसी तरह के अल्पकालिक विशेष पाठ्यक्रमों में भाग लेने की इच्छा व्यक्त की।

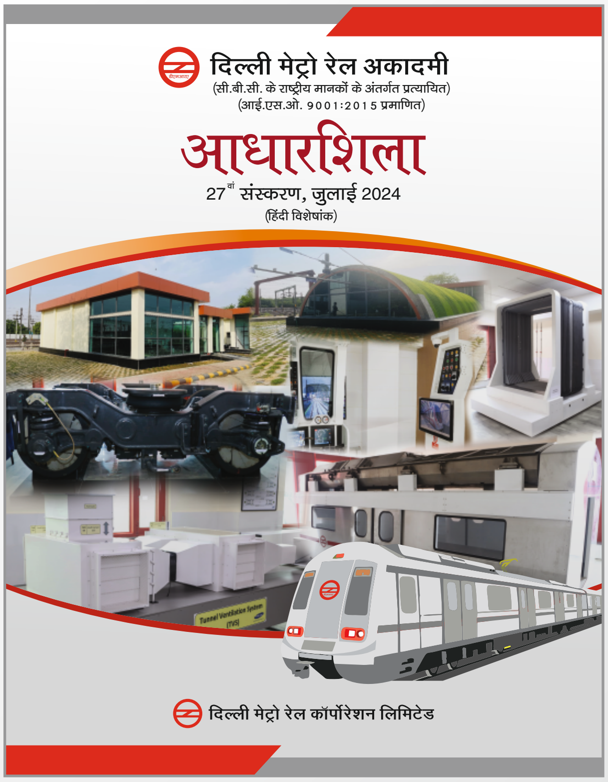

आधारशिला

27 वां संस्करण, जुलाई 2024

(हिंदी विशेषांक)

संपादक

महेन्द्र सिंह

प्राचार्य

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी

सह संपादक

डॉ. अस्मिका सिन्हा

प्रबंधक राजभाषा

एवं पुस्तकालय प्रभारी

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी

प्रकाशक

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी

शास्त्री पार्क, दिल्ली–110053

विषय-सूची

निदेशक (परिचालन एवं सेवाएं) का संदेश	2
डीन के डेस्क से	3
प्राचार्य की कलम से	4
सह-संपादक की लेखनी से	5
स्वामी भूमानंद तीर्थ जी का संदेश	6
समझौता ज्ञापन	7
एन.सी.वी.ई.टी. की मान्यता	8
सार्थक संवाद	8
हिंदी में बोलकर टाइप करें	9
पीले पत्ते (कविता)	9
सुर्खियां	10-11
क्या 'भ्रष्टाचार' विकास का द्योतक है?	12-13
मौन का गहरा सार : बौद्ध ध्यान के ज्ञान की खोज	13
ट्रेन डिटेक्शन सिस्टम-एक्सल काउंटर	14-15
कहाँ खो गई है आपकी मुस्कान	16-17
सुकून (कविता)	17
मानव और रोबोट में अंतर	18-19
दिल्ली की जान है मेट्रो	19
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	20

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी

निदेशक (परिचालन एवं सेवाएं) का संदेश...

जन परिवहन के क्षेत्र में दिल्ली मेट्रो आज किसी परिचय की मोहताज नहीं है। दिल्ली की जीवन रेखा के रूप में विख्यात दिल्ली मेट्रो ने आरामदायक ट्रेन यात्राओं और समयपालन से देश भर की मेट्रो में विशेष ख्याति और पड़ाव प्राप्त कर लिया है। आधुनिक और पर्यावरण अनुकूल सेवाओं के माध्यम से हम जन आकांक्षाओं पर लगातार खरे उतरे हैं और भविष्य में हमें अपने विजन और मिशन के अनुरूप ग्राहकों को सुगम और निर्बाध सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए तत्परता से कार्य करते रहने की अपनी संस्कृति बनाए रखने की आवश्यकता है।

यह प्रसन्नता की बात है कि दिल्ली मेट्रो की छमाही पत्रिका 'आधारशिला' के हिंदी विशेषांक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से प्रति वर्ष पत्रिका के जुलाई संस्करण का हिंदी में प्रकाशन एक सराहनीय कदम है। इसके लिए दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी और पत्रिका के प्रकाशन से जुड़ी पूरी टीम बधाई की पात्र है। इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रोत्साहन हेतु दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी प्रबंधन की पुनः सराहना करता हूं और आशा करता हूं कि वे इस मंच के साथ-साथ अन्य माध्यमों से राजभाषा को बढ़ावा देने के प्रयास जारी रखेंगे। मैं सुधी पाठकों और इस पत्रिका के रचनाकारों को भी साधुवाद देना चाहता हूं जिनकी मेहनत से यह पत्रिका लोकप्रियता के नए आयाम रच रही है। आधारशिला पत्रिका अपने प्रकाशन के 14वें वर्ष में पहुंच गई, यह सुखद आश्चर्य से कम नहीं है। यह इस बात का भी द्योतक है कि हमारा संगठन, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रूप से भी उतना हीं सक्षम है जितना तकनीकी रूप से।

मुझे विश्वास है कि पूर्व की भांति यह हिंदी विशेषांक भी आपको पसंद आएगा। लेखों/कृतियों/रचनाओं/संस्मरण आदि के माध्यम से इस ऑनलाइन पत्रिका को और ज्ञानवर्धक एवं रोचक बनाने के लिए सभी रचनाकार प्रशंसा के पात्र हैं।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ. अमित कुमार जैन)
निदेशक (परिचालन एवं सेवाएं)

डीन/डी.एम.आर.ए. के डेस्क से...

बारिश की फुहारों के साथ "आधारशिला" का नया संस्करण आपके हाथों में है।

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी ने समय के साथ प्रशिक्षण के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए हैं। अत्याधुनिक सिम्युलेटर, प्रैक्टिकल डेमो रूम, व्यावहारिक प्रशिक्षण सुविधाओं ने इसे एक अत्याधुनिक प्रशिक्षण अकादमी के रूप में परिवर्तित किया है। अकादमी ने कर्मचारियों के लिए तकनीकी प्रशिक्षण पर जोर दिया है और साथ ही परियोजना प्रबंधन, मेट्रो परिचालन, सुरक्षा, आपातकालीन प्रतिक्रिया और ग्राहक सेवा के क्षेत्रों में भी व्यापक पाठ्यक्रम विकसित किए हैं।

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी केवल दिल्ली मेट्रो के कर्मचारियों के लिए ही नहीं, बल्कि भारत के अन्य मेट्रो प्रणालियों जैसे बेंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई और मुंबई के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है। इसके अलावा, कई अंतर्राष्ट्रीय मेट्रो प्राधिकरणों जैसे ढाका मेट्रो, श्रीलंका मेट्रो के कर्मचारियों का प्रशिक्षण भी अकादमी ने किया है। वर्तमान में मंगोलिया, अल-सल्वाडोर के प्रतिनिधिमण्डल ने भी अकादमी की सुविधाओं का अवलोकन किया और डी.एम.आर.ए. की अत्याधुनिक प्रशिक्षण व्यवस्था की सराहना की, जिससे यह एक वैश्विक मान्यता प्राप्त संस्थान बनने की ओर अग्रसर है। दिल्ली मेट्रो अकादमी ने अपनी गुणवत्ता और उत्कृष्टता के कारण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है।

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डी.एम.आर.सी.) और गति शक्ति विश्वविद्यालय (जी.एस.वी.), वडोदरा के बीच ऐतिहासिक समझौता पारस्परिक सहयोग में वृद्धि के साथ शैक्षणिक प्रयासों को समृद्ध करेगा। अनुसंधान, शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के लिए दोनों संस्थान एक स्थायी साझेदारी स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करेंगे। हाल ही में एन.सी.वी.ई.टी. से प्राप्त मान्यता यह दर्शाती है कि अकादमी राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे के अनुसार अनुमोदित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने और राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क के अनुसार कठोर मूल्यांकन करने के लिए उच्चतम मानकों को पूरा करती है। एक मूल्यांकन एजेंसी के रूप में, डी.एम.आर.ए. को दक्षताओं के मूल्यांकन और प्रमाणन का अधिकार प्राप्त है।

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी का भविष्य उन मूल्यों और सिद्धांतों - नवाचार, उत्कृष्टता, और सतत विकास पर आधारित है जिन्होंने इसे सफल बनाया है। इन मूल्यों के साथ, अकादमी, दिल्ली मेट्रो के साथ-साथ पूरे देश और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर परिवहन क्षेत्र में प्रशिक्षण के मामले में नई ऊंचाइयां छूने को तत्पर है।

घनश्याम बंसल
डीन/दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी

प्राचार्य की कलम से...

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन पिछले दो दशकों में सार्वजनिक परिवहन के क्षेत्र में एक नई क्रांति लाई है। न केवल दिल्ली मेट्रो ने राजधानी और उसके आस-पास के क्षेत्रों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि यह भारतीय मेट्रो नेटवर्क के विकास के लिए एक मानक भी स्थापित कर चुकी है। इस प्रक्रिया में, दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम था, जिसने इस सफलता की नींव को और अधिक मजबूत बनाया है। किसी भी संस्थान की सफलता के लिए प्रशिक्षण और कुशल प्रशिक्षित कर्मियों का होना अत्यंत आवश्यक है। दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी इसी आवश्यकता को पूरा करती है। यह संस्थान न केवल दिल्ली मेट्रो के कर्मचारियों, बल्कि देश-विदेश के अन्य मेट्रो परियोजनाओं के लिए भी प्रशिक्षण की व्यवस्था करती है। इस अकादमी में तकनीकी प्रशिक्षण के साथ-साथ यात्री सेवा, सुरक्षा और आपातकालीन प्रबंधन पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी में अत्याधुनिक सिम्युलेटर, प्रैक्टिकल डेमो रूम, व्यावहारिक प्रशिक्षण सुविधाएं और ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म ने इसे एक अत्याधुनिक प्रशिक्षण अकादमी के रूप में बदल दिया है। दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी ने अपनी गुणवत्ता और उत्कृष्टता के कारण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है।

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डी.एम.आर.सी.) और गति शक्ति विश्वविद्यालय (जी.एस.वी.), वडोदरा के बीच ऐतिहासिक समझौता, पारस्परिक सहयोग में वृद्धि, शैक्षणिक प्रयासों को समृद्ध करने और अनुसंधान, शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा देने के लिए दोनों संस्थानों के बीच एक साझेदारी स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

डी.एम.आर.ए., डी.एम.आर.सी. के मिशन स्टेटमेंट के तहत, भारत वर्ष के सर्वश्रेष्ठ अकादमी के रूप में प्रतिष्ठित है। गत वर्ष सी.बी.सी. द्वारा डी.एम.आर.ए. को आठ आधारों अर्थात् प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आकलन और पाठ्यक्रम का डिज़ाइन, फैकल्टी, संसाधन और प्रशिक्षण के लक्ष्य, प्रशिक्षुओं की सहायता, डिजिटलाइजेशन और प्रशिक्षण, सहयोग, प्रशिक्षण का मूल्यांकन और गुणवत्ता आश्वासन तथा परिचालन और गवर्नेंस पर दिए गए प्रमाणन, इसकी असाधारण प्रशिक्षण पद्धतियों, अत्याधुनिक संसाधनों, अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे और डोमेन विशेषज्ञता के माहौल को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को मान्यता मिली है। भारत में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए योग्यता और मूल्यांकन प्रक्रियाओं को विनियमित और मानकीकृत करने के लिए जिम्मेदार एन.सी.वी.ई.टी. द्वारा डी.एम.आर.ए. को हाल ही में मान्यता दी गई। डी.एम.आर.ए., आई.एस.ओ. 9001:2015, 2009 प्रमाणन प्राप्त संस्था है। यह अकादमी अब तक 77 हजार प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण दे चुकी है। अपने कर्मचारियों के साथ-साथ पूरे भारत में सार्वजनिक परिवहन के क्षेत्र में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए यह अकादमी एक आदर्श केंद्र बन चुकी है।

दिल्ली मेट्रो की सफलता की कहानी में यह अकादमी एक महत्वपूर्ण अध्याय जैसी है और हम उम्मीद करते हैं कि भविष्य में भी यह इसी प्रकार उत्कृष्टता की ऊंचाइयों को छूती रहेगी। दिल्ली मेट्रो अकादमी ने खुद को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनाया है। आगे की राह में, दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी का लक्ष्य है कि वह सतत विकास और नवाचार को प्रोत्साहित करे।

महेंद्र सिंह
प्राचार्य, दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी

सह-संपादक की लेखनी से...

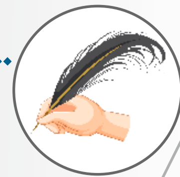

आधारशिला पत्रिका का 27वां संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। पत्रिका चाहे कोई भी हो, वह लेखकों के योगदान के बिना अधूरी होती है। किसी पत्रिका को जीवंत बनाने में लेखकों के विचार, रचनात्मकता और लेखनी ही वे तत्व हैं जो उसके विकास और सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पत्रिका के माध्यम से लेखक अपने विचार और अनुभव पाठकों तक पहुंचाते हैं। तकनीकी और सामान्य लेख, कविताएं आदि पाठकों को नए दृष्टिकोण प्रदान करती हैं और उन्हें सोचने के लिए प्रेरित करते हैं। विभिन्न विधाओं के लेखकों के योगदान से पत्रिका में विविधता आती है। विभिन्न विषयों पर लेखकों के विविध दृष्टिकोण से नई जानकारियां मिलती है। अनुभवी लेखकों के योगदान से पत्रिका की साख और प्रतिष्ठा बढ़ती है और युवा लेखकों को प्रेरणा भी मिलती है। नए लेखकों को अपनी प्रतिभा के लिए एक मंच मिलता है, इससे लेखन के क्षेत्र में नवीन प्रतिभाओं का विकास होता है।

दिल्ली मेट्रो ने 3 मई 2024 को अपना 30वां स्थापना दिवस मनाया। यह मात्र स्थापना दिवस ही नहीं अपितु गौरवशाली इतिहास को याद करने का एक मौका था, जिसमें भविष्य के लिए नई संभावनाओं और उन्नति की दिशा में किए जाने वाले प्रयासों का समावेश था। इस अवसर पर भारत मंडपम में आयोजित समारोह में डी.एम.आर.सी. के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए पुरस्कृत भी किया गया।

आधारशिला पत्रिका को और अधिक सार्थक बनाने के लिए हम पाठकों से सक्रिय भागीदारी की आशा करते हैं। आपके विचार, सुझाव और लेख हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। हमें विश्वास है कि आपके योगदान से यह पत्रिका और भी समृद्ध होगी। आपके फीडबैक और सुझाव गुणवत्ता लाने में सहायक सिद्ध होते हैं जिससे पत्रिका को पाठकों की अपेक्षाओं के अनुरूप बनाने में मदद मिलती है।

राहत इंदौरी साहब की यह पंक्ति बहुत ही सुंदर है:

राह के पत्थर से बढ़ कर कुछ नहीं हैं ये मंजिलें,
रास्ते आवाज देते हैं सफर जारी रखो!

अंत में आपसे आग्रह है कि हमारे इस प्रयास को जारी रखने में अपना सहयोग दें और अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएं। आपके समर्थन और प्रोत्साहन के बिना हमारा यह प्रयास अधूरा रहेगा। आधारशिला पत्रिका की टीम को धन्यवाद एवं शुभकामनाएं।

(डॉ. अस्मिका सिन्हा)
प्रबंधक राजभाषा
एवं पुस्तकालय प्रभारी

स्वामी भूमानंद तीर्थ जी का संदेश

हर पल को दिव्य बनाने के लिए अभ्यास

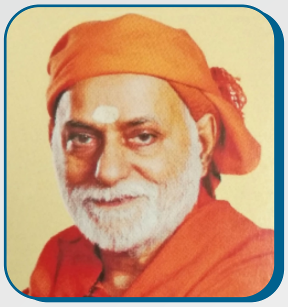

स्वामी भूमानन्द तीर्थ जी

आध्यात्मिक जीवन और खोज क्या है, इसका आप सबके मन में बहुत स्पष्ट मूल्यांकन होना चाहिए। आप क्या खोज रहे हैं? आध्यात्मिक खोज का आपके लिए क्या अर्थ है? इसके गुण क्या हैं और यह आपको कहां ले जाएगा? इन सभी विचारों और जिज्ञासाओं पर अपने मन और बुद्धि द्वारा बार-बार विचार करना चाहिए ताकि आपको अपनी खोज का उचित मूल्यांकन और समझ मिल सके।

धर्म में बाहरी ईश्वर पर जोर होता है। लेकिन आध्यात्मिकता में पूरा ध्यान बाहर से अंदर की ओर मुड़ जाना चाहिए। आपको अपने शरीर, मन और बुद्धि को शुद्ध और एकीकृत करना होगा ताकि आप यह अनुभव कर सकें कि सब कुछ ईश्वर या ब्रह्म है। आपकी खोज की पूर्ति उस अनुभूति में है, उस एकमात्र उपस्थिति और सत्य को जानने में है जो इस अनेक प्रतीत होने वाले संसार में निहित है।

हमारे व्यक्तित्व को दो तरह से अनुशासित होना चाहिए - ग्रहण करने में और साथ ही व्यक्त करने में, 'अंदर लेने' में और साथ ही 'बाहर देने' में। आप जो कुछ भी आँखों से देखते हैं, कानों से सुनते हैं, जो कुछ भी आप छूते हैं, सूंघते हैं, चखते हैं, खाते हैं या पीते हैं, वह सब ग्रहण करने की प्रक्रिया है। इन सब में व्यक्ति को उदात्त और अनुशासित बनना होगा। इसीलिए हम आपसे सात्विक कपड़े पहनने, सात्विक भोजन करने, अच्छे शब्द सुनने के लिए कहते हैं। अनुशासन यह है कि बाहरी दुनिया से आपके भीतर जो भी पहुंचता हैं, उनके बारे में सावधान और चयनशील रहें। इसी तरह शब्दों, विचारों, कार्यों और बातचीत के माध्यम से खुद को व्यक्त करने के मामले में भी आपको उत्तरोत्तर अधिक से अधिक अनुशासित, उदात्त और आध्यात्मिक बनना होगा।

हमारे भोजन के बाद के सत्संग में, माँ अक्सर संतों की जीवनी से उपाख्यान और दृष्टांत पढ़ती हैं। मुझे लगता है इन उपाख्यानों को पढ़ने या सुनने से आपकी साधना पर बहुत प्रभाव पड़ता है। जीवनी संबंधी विवरणों में आपको आध्यात्मिकता का मूर्तिमान रूप मिलेगा। इस तरह का नियमित पढ़ना और सुनना एक ऐसे साधक के लिए एक महान अनुशासन है जो अपने को शुद्ध बनाना चाहता है।

भोजन करना सभी के लिए एक आवश्यक और सामान्य क्रिया है। इस सेवन को अनुशासित करने के लिए हम सबसे पहले अपने शरीर और मन पर सात्विक प्रभाव डालने के लिए सामग्री और खाना पकाने की प्रणाली इन दोनों का चयन करते हैं। इसके अलावा इस सेवन को उदात्त और दिव्य बनाने के लिए हम भोजन करने से पहले भगवद्गीता के 15वें अध्याय और कुछ अन्य मंत्रों का जाप करते हैं। इस अभ्यास से हम अपने मन और शरीर को केवल वही ग्रहण करने के लिए तैयार करते हैं जो हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए अनुकूल होगा।

अब जिस तरह से आप खुद को व्यक्त करते हैं, उसे भी पूरी तरह से आध्यात्मिक बनाना होगा। आपके शब्द और कार्य - जिस तरह से आप बोलते हैं, बैठते हैं और उठते हैं, जिस तरह से आप चलते हैं और प्रणाम करते हैं - ये सब आपके मानसिक बनावट और पवित्रता को दर्शाते हैं। इसलिए हम आपसे सभी दैनिक आदतों में स्वच्छता बनाए रखने के लिए कहते हैं। मैं हमेशा कहता हूं कि आपका बाथरूम आपके पूजा कक्ष जितना ही साफ होना चाहिए। क्या भगवान केवल पूजा कक्ष में ही उपस्थित हैं? जितना अधिक आप अपने व्यवहार को आध्यात्मिक बनाएंगे और अपने जीवन और गतिविधियों के हर पहलू को अनुशासित करने के प्रति सजग होंगे, उतनी ही अधिक उत्कृष्टता का अनुभव करेंगे। आप सभी ध्यान का अभ्यास करते हैं। यह ध्यान किस लिए है?

ऐसा मत सोचिए कि ध्यान हमेशा समाधि या आत्म-लीनता के लिए होता है। तल्लीनता इसका एक पहलू हो सकता है। परंतु तल्लीनता से पहले और बाद के जीवन के बारे में क्या? ध्यान हमारे व्यक्तित्त्व की कमियों और दोषों को समझने व इस तरह शुद्धता लाने के लिए मन का एक आंतरिक केंद्रीकरण है। जब आप अपनी आँखें बंद करके बैठते हैं, मन के भीतर झांकते हैं, तो आपको अपने अंदर के विचारों के आकारों का पता चल जाएगा। आप अपने मन को समझेंगे - इसकी विभिन्न छिपी प्रवृत्तियों को देख पाएंगे। विचार आपके सामने आएंगे और दर्पण में एक प्रतिबिंब की भांति खड़े होंगे। यदि आप उन्हें पसंद नहीं करते हैं, यदि वे अनुकूल नहीं हैं, तो उनकी प्रकृति की खोज ही उन्हें खत्म करने या उदात्त करने की प्रक्रिया शुरू कर देगी। लेकिन इस संबंध में व्यक्ति को सच्चा और सीधा होना पड़ेगा।

द्रष्टा का अंतिम अनुशासन सब कुछ को ब्रह्म में निहित देखना है। उसकी बुद्धि का निरंतर ध्यान सभी अनेकता के अंतर्निहित एकता पर केंद्रित होता है। उससे कोई भी अध्यात्महीन चीज कैसे आ सकती है? जब मैं ग्रामीणों से बात करता हूं, तो मैं उनसे अपने स्तर पर बात नहीं कर सकता। वे यहां अपने उद्देश्य से आते हैं। क्या मैं उनके लिए दुष्प्राप्य हो जाऊं? उनका उद्देश्य जो भी हो, मुझे पूरे संवाद को आध्यात्मिक बनाना है। मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूंगा जो आध्यात्मिक न हो। यह मेरे लिए संभव नहीं है।

ऐसा संपूर्ण आध्यात्मिकीकरण संतों या गुरु के सानिध्य में रहने से प्राप्त हो सकता है। गुरु के सानिध्य में पूरा वातावरण आध्यात्मिक होता है। आश्रम से संबंधित कोई भी कार्य गुरुसेवा ही है, वह साधक को शुद्ध करने के लिए की जाने वाली सेवा है। चाहे बर्तन साफ करना हो, टिकट लगाना हो, आवश्यक सामान लाने के लिए शहर जाना हो या कोई अन्य कार्य, जब आप निर्धारित कार्य करें, तो सोचें, 'क्या मैं इसे प्रसन्नतापूर्वक कर रहा हूँ? क्या यह मेरे द्वारा मेरे गुरुदेव की पूजा के रूप में किया जा रहा है?'

यदि आप इस प्रकार आत्मनिरीक्षण करेंगे, तो बहुत जल्द ही आप पाएंगे कि आपके मन में एक लगाव बढ़ रहा है - अपने गुरु के साथ-साथ अन्य आश्रमवासियों के लिए भी लगाव और प्रेम। वह लगाव आपको धीरे-धीरे अधिक से अधिक शुद्ध और उत्कृष्ट बनाता जाएगा। आप जो कुछ भी करेंगे, वह आध्यात्मिक और उत्कृष्ट बन जाएगा। अंत में, यह विचार ही मन से निकल जाएगा कि कुछ 'गैर-आध्यात्मिक' है। यही अंतिम अभ्यास है।

हरिः ॐ तत्सत्।

समझौता ज्ञापन

डी.एम.आर.ए. और गति शक्ति विश्वविद्यालय, वडोदरा ने शैक्षणिक सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डी.एम.आर.सी.) और गति शक्ति विश्वविद्यालय (जी.एस.वी.), वडोदरा की ओर से 15 फरवरी, 2024 को डी.एम.आर.सी. के प्रबंध निदेशक डॉ. विकास कुमार और प्रोफेसर डॉ. मनोज चौधरी, कुलपति, गति शक्ति विश्वविद्यालय और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में मेट्रो भवन में एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर किए। यह ऐतिहासिक समझौता ज्ञापन पारस्परिक सहयोग को बढ़ावा देने, शैक्षणिक प्रयासों को समृद्ध करने और इन दोनों महत्वपूर्ण संस्थानों के बीच एक स्थायी साझेदारी स्थापित करने की दिशा में एक विशिष्ट आयाम है।

डी.एम.आर.सी. और जी.एस.वी. दोनों अब परिवहन और लॉजिस्टिक्स के क्षेत्र में विशेष रूप से मेट्रो रेल प्रौद्योगिकी से संबंधित अध्ययन और अनुसंधान आयोजित करने के लिए मिलकर काम करेंगे, जिससे अनुसंधान, शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा मिलेगा। ये दोनों संस्थान वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रबंधन संबंधी विषयों की समझ को गहरा करने; ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक निर्बाध मंच स्थापित करने; शक्तियों के संयोजन द्वारा विभिन्न विषयों में नवीन समाधानों को बढ़ावा देने और सहभागी शिक्षा के माध्यम से क्षमता निर्माण को बढ़ाने का कार्य करेंगे। सहयोगात्मक प्रयासों से शैक्षणिक और परिवहन परिदृश्य में सकारात्मक बदलाव की लहर पैदा होने की उम्मीद है।

डॉ. विकास कुमार, प्रबंध निदेशक/डी.एम.आर.सी. ने इस पहल में शामिल सभी लोगों को उनके समर्पण और दूरदर्शिता के लिए बधाई देते हुए कहा, 'यह सहयोग वास्तव में दोनों संस्थानों के लिए बहुत लाभकारी साबित होगा, जो राष्ट्र-निर्माण के विस्तृत हित में योगदान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।'

डी.एम.आर.सी., अपनी प्रमुख प्रशिक्षण अकादमी, जिसे 'दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी' के नाम से जाना जाता है, के माध्यम से 2002 से प्रोजेक्ट प्लानिंग, परिचालन के कार्यान्वयन और रेल आधारित शहरी परिवहन प्रणालियों के रखरखाव आदि के विभिन्न पहलुओं पर अनुकूलित प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है। जबकि, गति शक्ति विश्वविद्यालय (जी.एस.वी.) परिवहन और लॉजिस्टिक के क्षेत्र में भारत का पहला विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय उच्च गुणवत्ता वाले अत्यंत कुशल कार्मिक तैयार करने के लिए अनुभव आधारित शिक्षा और शिक्षा-जगत इंटरफेस के माध्यम से व्यावहारिक शिक्षा, प्रशिक्षण, कौशल और अनुसंधान में एक अद्वितीय प्रस्ताव प्रदान करता है।

एन.सी.वी.ई.टी. मान्यताः दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी (डी.एम.आर.ए.) को 10.06.2024 को राष्ट्रीय व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.वी.ई.टी.) से दोहरी मान्यता (पुरस्कार और मूल्यांकन) प्राप्त हुई।

एन.सी.वी.ई.टी, भारत का एक नियामक निकाय है जो व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए योग्यता और मूल्यांकन प्रक्रियाओं को विनियमित और मानकीकृत करने के लिए उत्तरदायी है। एनसीवीईटी का उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम सुनिश्चित करना है जो उद्योग की जरूरतों को पूरा करते हैं और राष्ट्र की कौशल विकास पहलों में योगदान करते हैं। एन.सी.वी.ई.टी. मान्यता, यह दर्शाती है कि डी.एम.आर.ए. राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचे (एन.एस.क्यू.एफ.) के अनुसार अनुमोदित प्रशिक्षण कार्यक्रम देने और राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (एन.सी.आर.एफ.) के अनुसार कठोर मूल्यांकन करने के लिए उच्चतम मानकों को पूरा करता है। डी.एम.आर.ए. को अब व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को विकसित करने, वितरित करने और प्रमाणित करने के लिए अवार्ड देने वाली संस्था के रूप में मान्यता यह सुनिश्चित करते हुए प्राप्त है, कि प्रशिक्षुओं को ऐसी योग्यताएं प्राप्त हों जो राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त हों और पूरे उद्योग में मूल्यवान हों। इसके अतिरिक्त, एक मूल्यांकन एजेंसी के रूप में, डीएमआरए को प्रोफेशनल की दक्षताओं का मूल्यांकन और प्रमाणन करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया है।

सार्थक संवाद

सही संवाद का जीवन में बहुत महत्व है। अगर किसी विषय पर किए गए संवाद का अर्थ, दूसरे पक्ष को उसी भावार्थ में समझ नहीं आया तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इस संबंध में भारतीय इतिहास में प्राचीन काल में भी कई उदाहरण उपलब्ध हैं जैसे कि महाभारत में "अश्वथामा मारा गया", कालिदास और विद्योत्तमा का वाद-विवाद इत्यादि।

आज के युग में चारों ओर भागम-भाग, कार्यक्षेत्र में भी इतनी व्यस्तता है कि कोई अधिकारी जो अपने अधीनस्थ अधिकारी को कार्य बताते हैं कई बार जल्दबाजी में सही कम्युनिकेशन नहीं कर पाते या अधीनस्थ अधिकारी उसका दूसरा अर्थ निकाल लेते हैं। इसके परिणामस्वरूप कार्य सही से नहीं हो पाता और मानव श्रम के साथ-साथ आर्थिक नुकसान भी होता है और आपका उद्देश्य भी समय पर पूरा नहीं हो पाता है।

इसे एक उदाहरण के साथ समझने की कोशिश करते हैं।

"एक ग्राहक ए.सी. यूनिट खरीदने हेतु एक शोरूम पर गया। खरीदारी के बाद, दुकानदार ने अपने ए.सी. मेकेनिक को फिटिंग के लिए बुलाया और उसे बताया कि ए.सी. को 25 डिग्री पर लगा देना, जिससे बिल कम आए। मेकेनिक का दिमाग इंजीनियर वाला था और उसने ए.सी. की इंटरनल यूनिट को दीवार पर 25 डिग्री के कोण पर फिक्स कर दिया।"

अतः जीवन में सही कम्युनिकेशन होना आवश्यक है ताकि जिस भाव में आप किसी को किसी कार्य का निर्देश दे रहे हैं उसको भी उसी भाव में समझ आना जरूरी है।

(ओ.एस. सैनी)
महाप्रबंधक/योजना

हिंदी में बोलकर टाइप करें

आज का युग मोबाइल और इंटरनेट का है। इनमें नित नए फीचर जुड़ रहे हैं। हिंदी की बात करें तो विंडो 2007 और इससे ऊपर के ऑपरेटिंग सिस्टम्स के साथ यूनिकोड के माध्यम से हिंदी देवनागरी लिपि सहित भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में टाइप करना आसान हुआ है। किंतु भिन्न-भिन्न टाइपिंग माध्यमों के चलते और तेजी से परिवर्तित होते सूचना प्रौद्योगिकी परिवेश में यूजर कुछ नया करना और सीखना चाहते हैं। कम इनपुट से हम अधिक आउटपुट चाहने लगे हैं। इसी क्रम में क्रॉम ब्राउजर में वॉयस-टू-टेक्स्ट फीचर के द्वारा बोलकर टाइप करने की सुविधा उपलब्ध है जिसमें यूजर माइक्रोफोन पर बोलकर टाइप कर सकता है। बस आपका जी-मेल अकाउंट और हार्डवेयर के रूप में माइक या मोबाइल ईयरफोन होना चाहिए। यदि कंप्यूटर पर माइक्रोफोन ड्राइवर इंस्टाल न हो तो गूगल से इंस्टाल करें या जिन कंप्यूटर/लैपटॉप में इनबिल्ट माइक्रोफोन हों, उनमें ड्राइवर इंस्टाल करने की आवश्यकता नहीं होती। गूगल डॉक्स में फॉरमेटिंग के सभी फीचर हैं, इसमें हिंदी अथवा किसी भी भाषा में बोलकर टेक्स्ट को टाइप किया जा सकता है, विराम चिह्न पंक्चुएशन आदि मैनुअली लगाने होते हैं। कोई शब्द गलत टाइप होने या मैटर छूट जाने पर उसे फिर से टाइप किया जा सकता है। माइक्रोफोन बंद होने पर उसे पुनः स्टार्ट किया जा सकता है। टाइपिंग के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन करें:

- अपने कंप्यूटर में माइक्रोफोन वाले स्लॉट (हरे रंग का) में माइक या माइक्रोफोन लगाएं।
- जिन कंप्यूटरों या लैपटॉप में इनबिल्ट माइक्रोफोन हों उनमें इसकी आवश्यकता नहीं है।
- माइक्रोफोन ड्राइवर लोड करने के लिए गूगल से M-Audio Producer USB_6_1_0 डाउनलोड करके रन करें, इंस्टाल होने पर माइक्रोफोन इनेबल हो जाएगा।
- अपना जी-मेल अकाउंट खोलें। गूगल एप्स पर क्लिक करें। ड्रॉप डाउन लिस्ट में नीचे जाकर 'मोर' कमांड पर जाकर डॉक्स पर क्लिक करें। डॉक्स में ब्लैंक पेज खोलें। इस पेज के सभी फीचर वर्ड एप्लीकेशन के पेज के समान हैं।
- अब इस ब्लैंक डॉक्यूमेंट में टूल्स पर जाकर क्लिक करें, और ड्रॉप डाउन में नीचे जाकर वॉयस टाइपिंग पर क्लिक करें।
- आपकी स्क्रीन पर बाईं ओर माइक का एक चित्र प्रदर्शित होगा जिसके ऊपर English (UK) लिखा दिखेगा। माइक के चित्र पर क्लिक करने पर यह ऑन स्थिति में दिखेगा, आप अंग्रेजी में बोलकर भी टाइप करना आरंभ कर सकते हैं। हिंदी में टाइपिंग के लिए English (UK) के दाहिने ओर एरो पर क्लिक करके ड्रॉप डाउन लिस्ट में नीचे जाकर 'हिंदी' को सलेक्ट करें। इस ड्रॉप डाउन लिस्ट में 90 भाषाएं हैं, जिसमें हिंदी भाषा 86वें स्थान पर हैं।
- 'हिंदी' सलेक्ट करने के बाद माइक के चित्र के नीचे click to speak पर क्लिक करें। allow पर क्लिक करते ही माइक के चारों ओर रिंग बनते नजर आएंगे, अब आप बोलना आरंभ करें, डॉक्यूमेंट में हिंदी टेक्स्ट टाइप होना शुरु हो जाएगा।
- अपने हिंदी पाठ को सामान्य गति और स्पष्ट उच्चारण के साथ बोलें, रुक जाने पर माइक्रोफोन बंद हो जाएगा। दोबारा बोलने के लिए पुनः माइक्रोफोन पर क्लिक करें।
- आप इस डॉक्यूमेंट को save कर सकते हैं। प्रिंट ले सकते हैं या मैटर को कॉपी करके वर्ड की फाइल में पेस्ट करके विराम चिह्न और फारमेटिंग आदि कर सकते हैं। मैटर में किसी गलती को ठीक करने के लिए इच्छित टेक्स्ट को सलेक्ट करें और माइक में फिर से बोलकर उसे बदलें।

तो कैसा लगा हिंदी का यह सफर।

-हिंदी सलाहकार
डी.एम.आर.सी

टहनियों पर लगे पीले पत्ते मत तोड़ो तुम
चंद रोज़ में खुद व खुद झड़ जायेंगे।
बैठा करो कुछ तो बुजुर्गों के पास तुम
एक दिन खुद ही ये चुप हो जायेंगें।
खर्चने दो उन्हें बेहिसाब तुम यारों
एक दिन सब तुम्हारे लिए छोड़ जायेंगे।
मत टोको उनको, बार-बार बात दुहराने पर
एक दिन हमेशा के लिए ख़ामोश हो जायेंगे।
इनका आशीर्वाद सर पर ले लिया करो तुम
वर्ना फिर ये तस्वीरों में ही नज़र आयेंगे।
खिला दो उनको कुछ उनकी पसंद का
फिर श्राद्ध में भी देखना खाने नहीं आयेंगे।

(संजीव कुमार)
वरि. प्रधान अनुरक्षक

सुर्खियां...

मंगोलिया के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि मंडल ने डी.एम.आर.ए. का दौरा किया

डी.एम.आर.ए. ने 06 मार्च, 2024 को मंगोलिया के एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि मंडल का स्वागत किया। इस प्रतिनिधि मंडल में सड़क परिवहन मंत्रालय (मंगोलिया), एशियन डेवलपमेंट बैंक और आई.आई.आई.टी.-दिल्ली के अधिकारी शामिल थे। डीन/डी.एम.आर.ए. ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए डी.एम.आर.ए. के संबंध में एक संक्षिप्त प्रस्तुति दी और उन्हें अकादमी में स्थित विभिन्न सुविधाओं जैसे डिजिटल लाइब्रेरी, विभिन्न प्रदर्शन कक्षों, उन्नत ड्राइविंग और मेन्टेनेंस सिम्युलेटरों का दौरा कराया तथा प्रशिक्षण क्षमताओं से अवगत कराया। डी.एम.आर.सी. की उन्नत प्रौद्योगिकी की जानकारी उपलब्ध कराई तथा मेट्रो के परिचालन और प्रशिक्षण के संबंध में भावी सहयोग के बारे में चर्चा की गई। प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने विचारों और संभावनाओं का आदान-प्रदान किया और डी.एम.आर.ए. के आतिथ्य-सत्कार के अतिरिक्त, अनुभवी संकाय और प्रभावशाली प्रशिक्षण सुविधाओं की सराहना की।

अल सल्वाडोर के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल ने डी.एम.आर.ए. का दौरा किया।

अल सल्वाडोर के एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल ने 19 अप्रैल, 2024 को दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी का दौरा किया। डीन/डी.एम.आर.ए. ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया और उन्हें डी.एम.आर.ए. में उपलब्ध प्रशिक्षण सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। इसके बाद आर.एस.-2 ड्राइविंग सिम्युलेटर और विभिन्न डिपो सुविधाओं का दौरा किया गया। प्रतिनिधिमंडल ने अकादमी की अत्याधुनिक सुविधाओं और प्रशिक्षण क्षमताओं की प्रशंसा की।

शहरी परिवहन मंडल, आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय के अधिकारियों ने डी.एम.आर.ए. का दौरा किया

आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय के शहरी परिवहन (यू.टी.) मंडल के दूसरे बैच के अधिकारियों ने 12 मार्च, 2024 को डी.एम.आर.ए. का दौरा किया। उन्हें डी.एम.आर.ए. के बारे में एक प्रस्तुति दिखाई गई। इसके बाद उन्हें डी.एम.आर.ए. में उपलब्ध विभिन्न अत्याधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर और प्रशिक्षण सुविधाओं जैसे ड्राइविंग और मेन्टेनेंस सिम्युलेटरों, प्रदर्शन कक्षों और डिजिटल लाइब्रेरी का दौरा कराया। दौरे पर आए अधिकारियों ने अकादमी की प्रशिक्षण व्यवस्था की सराहना की।

अपर महानिदेशक/आई.आर.आई.टी.एम. के दौरे की रिपोर्ट

श्री संजय त्रिपाठी, अपर महानिदेशक/आई.आर.आई.टी.एम. (इंडियन रेलवे इंस्टिट्यूट ऑफ ट्रांसपोर्ट मैनेजमेंट) ने 11 एवं 12 मार्च, 2024 को डी.एम.आर.ए. का दो-दिवसीय दौरा किया। इस दौरान उनके समक्ष डी.एम.आर.ए. के बारे में विस्तार से प्रस्तुति दी गई, साथ ही प्रशिक्षण सुविधाओं की जानकारी के साथ-साथ संकाय सदस्यों के साथ उन्होंने उपयोगी विचार-विमर्श किया। उन्होंने डी.एम.आर.ए. के अत्याधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर, अनुभवी संकाय और क्षमता निर्माण के लिए प्रतिबद्धता की सराहना की।

क्या 'भ्रष्टाचार' विकास का द्योतक है?

जैसे दानवों और राक्षसों के कई रूप होते हैं, वैसे ही भ्रष्टाचार के अनेक रूप हैं। ये सब ही वायरस की तरह उत्परिवर्तित हो सकते हैं और अलग-अलग रूपों में प्रकट हो सकते हैं। इसे नियंत्रित करने के लिए निरंतर प्रयास करना पड़ता है। तत्काल लाभ के लिए यह कुछ लोगों को लुभा सकता है, बिना भविष्य के दुष्प्रभावों को महसूस किए। पहले भ्रष्टाचार में जोखिम अपेक्षाकृत कम था, पर हाल ही में तकनीकी प्रगति ऐसे लोगों के लिए बुरी खबर है। अब, लगभग हर वित्तीय गतिविधि को थोड़ी सी भी निशानी के साथ ट्रैक किया जा सकता है। कानून के हाथ वास्तव में लंबे हो गए हैं। 'ट्रैप' और 'आय से अधिक संपत्ति' के मामलों में उच्च सजा दर ने साबित कर दिया है कि नई तकनीक ने चमत्कार किया है। अब सरल सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जो विस्तृत डेटा की भूलभुलैया से वांछित जानकारी को बहुत आसानी से खोज सकते हैं।

क्या हम भ्रष्टाचार से छुटकारा पा सकते हैं ?

शायद पूरी तरह से नहीं।

सभी प्रयासों और तकनीकी विकास के बावजूद, भ्रष्टाचार से पूरी तरह से छुटकारा पाना शायद संभव नहीं है। अधिक से अधिक हम निरंतर प्रयासों से इसे नियंत्रण में रख सकते हैं। दंडात्मक उपायों के अलावा, हमें निवारक सतर्कता पर जोर देने की जरूरत है, यानी कुछ ऐसा करना है जो घटना को रोक सके। दंडात्मक सतर्कता केवल एक पोस्टमार्टम है, जो भविष्य के मामलों के लिए सिस्टम को सुधारने के अलावा बहुत अधिक उद्देश्य पूरा नहीं करती है। डर का मनोविकार सभी मामलों में काम नहीं करता। हमें अपने सतर्कता अधिकारियों को दंडात्मक नीति अपनाने की बजाय संतुलित दृष्टिकोण के लिए प्रशिक्षित करने की जरूरत है। अत्यधिक उत्साही दृष्टिकोण कभी-कभी ईमानदार अधिकारियों के करियर को बर्बाद कर देता है जो समर्पण के साथ काम करते हैं लेकिन पर्याप्त सावधानी नहीं बरतते।

अक्सर इस बात पर बहस होती है कि क्या भ्रष्टाचार विकास का सूचक है?

एक धारणा है कि अगर हम भ्रष्टाचार को रोकने की कोशिश करते हैं, तो विकास कार्य रुक जाते हैं। इस धारणा को पूरी तरह से स्वीकार करना या नकारना कठिन हो सकता है, लेकिन यह तय है कि भ्रष्टाचार को बेरोकटोक जारी रहने की इजाजत नहीं दी जा सकती।

दुनिया का कोई भी भ्रष्ट देश समृद्ध नहीं हुआ है। किसी देश में वास्तविक विकास तभी हो सकता है जब उसके लोग ईमानदार, मेहनती और कुशल हों। दक्षता के बिना ईमानदारी और ईमानदारी के बिना दक्षता की उम्मीद नहीं की जा सकती। ईमानदार और कुशल लोगों की फसल उगाना आसान नहीं है, हमें निम्नलिखित कार्य सुनिश्चित करने पड़ सकते हैं: –

1. ऐसे लोगों का एक बड़ा हिस्सा है जिन्हें केवल अनुनय-विनय से ईमानदार होने के लिए राजी किया जा सकता है। वास्तव में, हमें बेईमानी को बहुत जोखिम भरा बनाना चाहिए और ईमानदारी को अधिक स्वीकार्य।
2. किसी भी निर्दोष व्यक्ति को अनावश्यक सतर्कता मामले में घसीटे जाने से अधिकारी का विश्वास खत्म हो जाता है और वह हमेशा के लिए नकारात्मक बन सकता है। साथ ही, हमें ईमानदार लोगों को रोजमर्रा के कामकाज में पकड़े जाने के डर से अक्षम नहीं होने देना चाहिए।
3. बिना किसी गलत इरादे से पहली बार गलती करने वाले अधिकारियों को काउंसलिंग से अधिक सजा नहीं देनी चाहिए।
4. हर छोटी-मोटी अनियमितता के मामले में सजा की बजाय व्यावहारिक कठिनाइयों पर विचार करना चाहिए।
5. हम न्यायिक मामलों की तरह 'अनुमोदक' यानि अप्रूवर की अवधारणा को लागू कर सकते हैं।

समय की मांग है कि हमें ईमानदार अधिकारियों को तैयार करना होगा और उनके साथ नरमी से पेश आना होगा अन्यथा यह समूह तेजी से विलुप्त हो रहा है। दरअसल, यही वे अधिकारी हैं जो साहसिक फैसले लेते हैं और 'भ्रष्टाचार मुक्त' भारत का झंडा बुलंद रखते हैं।

भारत में हमारा अनुभवः

भारत में हम भ्रष्टाचार पर काफी हद तक लगाम लगाने में सफल रहे हैं। लोगों में जागरूकता का स्तर कई गुना बढ़ा है और हम 'ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल' में अपनी रैंकिंग को बनाए हुए हैं और सुधार कर रहे हैं। लेकिन व्यापक धारणा यह भी है कि भ्रष्टाचार और विकास एक साथ चलते हैं। कुछ लोगो का मत है कि जितना विकास होगा, उतना ही भ्रष्टाचार होगा। वास्तव में, 'भ्रष्टाचार' विकास का एक झूठा संकेतक है। भ्रष्टाचार मुक्त देश अविकसित नहीं हैं और भ्रष्ट देश समृद्ध नहीं हैं। भारत के संदर्भ में, यह संभव है कि अगर हम भ्रष्टाचार विरोधी उपायों को बहुत सख्ती से लागू करने की कोशिश करें तो विकास पर अस्थायी रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़े। लेकिन, भ्रष्टाचार वास्तव में विकास का संकेतक नहीं है।

निष्कर्षः

एक ईमानदार व्यक्ति के लिए भ्रष्ट माहौल में काम करना मुश्किल है। भले ही वह इसका हिस्सा न हो, लेकिन वह जाने-अनजाने में इस प्रक्रिया में शामिल हो जाता है और इसके लिए उसे सजा मिलती है। यह 'काजल की कोठरी' में काम करने जैसा है, जहां बेदाग रहना मुश्किल है।

परिभाषा के अनुसार, भ्रष्टाचार निजी लाभ के लिए सार्वजनिक शक्ति का दुरुपयोग है। लेकिन हर छोटी-मोटी अनियमितता को भ्रष्टाचार नहीं माना जाना चाहिए। एक अधिकारी सैकड़ों निर्णय लेता है, संभावना है कि कोई निर्णय गलत हो सकता है, जो सांख्यिकी के नियमों के अलावा और कुछ नहीं है। वास्तव में, कोई भी निर्णय पूर्ण रूप से 'गलत' या 'सही' होता ही नहीं है, बल्कि परिणाम ही इसे 'सही' या 'गलत' बनाता है। यदि परिणाम सकारात्मक हैं, तो निर्णय की सराहना की जाएगी अन्यथा उसी निर्णय की निंदा की जाएगी और हम संभावित अनियमितताओं की तलाश में लग जाएंगे।

संक्षेप में, केवल मुट्ठी भर लोग ही सिस्टम को खराब कर रहे होते हैं। ये वे लोग हैं जो 'नीतिगत पक्षाघात' यानी 'पॉलिसी पैरालिसिस' के नाम पर हर समस्या के लिए सतर्कता एवं अन्य एजेंसियों को दोषी ठहराते हैं। दरअसल, यह उन दुर्बल लोगों का हथियार है जो कुछ करना ही नहीं चाहते हैं। अतः हमारी पूरी प्रणाली दोषपूर्ण नहीं है; इसमें केवल कुछ व्यक्ति ही दोषपूर्ण हैं। इस लिये हमें भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई जारी रखनी चाहिए।

हम निश्चित रूप से एक दिन जीतेंगे और 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत' के अपने सपने को साकार करेंगे।

घनश्याम बंसल
डीन/दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी

मौन का गहरा सारः बौद्ध ध्यान के ज्ञान की खोज

एक बौद्ध प्रबुद्ध गुरु के बारे में कहा जाता है कि वह एक शाम नदी के किनारे बैठे थे, पानी की आवाज का आनंद ले रहे थे, पेड़ों के बीच से गुजरती हवा की आवाज का आनंद ले रहे थे... एक आदमी उनके पास आया और उनसे पूछा, "क्या आप मुझे एक शब्द में अपने धर्म का सार बता सकते हैं?" गुरु चुप रहे, बिलकुल चुप, मानो उन्होंने सवाल सुना ही न हो। प्रश्नकर्ता ने कहा, "क्या आप बहरे हैं या कुछ और?" गुरु ने कहा, "मैंने आपका सवाल सुना है, और मैंने उसका उत्तर भी दिया है!

मौन ही उत्तर है। मैं चुप रहा - वह विराम, वह अंतराल, मेरा उत्तर था।" आदमी ने कहा, "मैं इस तरह के रहस्यमय उत्तर को नहीं समझ सकता। क्या आप थोड़ा और स्पष्ट नहीं कर सकते?" इसलिए, गुरु ने अपनी उंगली से रेत पर छोटे अक्षरों में "meditation" लिखा। आदमी ने कहा, "मैं अब पढ़ सकता हूँ। यह पहले से थोड़ा बेहतर है। कम से कम मेरे पास विचार करने के लिए एक शब्द है। लेकिन क्या आप इसे थोड़ा और स्पष्ट नहीं कर सकते?"

गुरु ने फिर से लिखा "MEDITATION" बेशक, इस बार उन्होंने बड़े अक्षरों में लिखा। वह आदमी थोड़ा शर्मिंदा, हैरान, अपमानित, क्रोधित महसूस कर रहा था। उसने कहा, "तुम फिर से meditation लिख रहे हो? क्या तुम मुझे थोड़ा स्पष्ट नहीं कर सकते?" और गुरु ने और बड़े अक्षरों में लिखा, "MEDITATION" उस आदमी ने कहा, "तुम पागल लगते हो!" गुरु ने कहा, "मैं पहले ही बहुत नीचे आ चुका हूँ। पहला उत्तर सही उत्तर था, दूसरा उतना सही नहीं था, तीसरा और भी गलत था, चौथा बहुत गलत हो गया है" - क्योंकि जब आप बड़े अक्षरों में meditation लिखते हैं तो आपने इसे भगवान बना दिया है।

इसीलिए God शब्द को कैपिटल G के साथ लिखा जाता है। जब भी आप किसी चीज को सर्वोच्च, परम बनाना चाहते हैं, तो आप इसे बड़े अक्षर से लिखते हैं। गुरु ने कहा, "मैंने पहले ही पाप कर दिया है।"

उन्होंने अपने द्वारा लिखे गए सभी शब्दों को मिटा दिया, और उन्होंने कहा, "कृपया मेरा पहला उत्तर सुनें - केवल तभी मैं सच्चा हूँ।"

मौन वह स्थान है जहां व्यक्ति जागता है, और शोरगुल वाला मन वह स्थान है जहां व्यक्ति सोया रहता है। सोया हुआ। अगर आपका मन लगातार बकबक करता रहता है, तो आप सो रहे हैं।

चुपचाप बैठे रहने पर, अगर मन गायब हो जाता है और आप पक्षियों की चहचहाहट सुन सकते हैं और अंदर कोई मन नहीं है, एक सन्नाटा... पक्षियों की यह सीटी, चहचहाहट, और आपके सिर में कोई मन काम नहीं कर रहा है, पूर्ण मौन... तब आपके अंदर जागरूकता उमड़ती है। यह बाहर से नहीं आती है, यह आपके अंदर पैदा होती है, यह आपके अंदर बढ़ती है।

बीरबल कुमार साह
सहायक प्रबंधक/सूचना प्रौद्योगिकी

ट्रेन डिटेक्शन सिस्टम – एक्सल काउंटर

भगवान सिंह
व्याख्याता/सिग्नलिंग

डी.एम.आर.सी. में रेल ट्रैक पर, ट्रेन मूवमेंट की सूरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक डिटेक्शन सिस्टम लगाया गया है जिससे ट्रेनों के बीच संभावित टक्कर को रोका जा सके और ट्रैक की स्थिति की सटीक जानकारी उपलब्ध हो सके जिससे सिग्नलिंग सिस्टम में ट्रेन की वास्तविक स्थिति की जानकारी मिल सके।

एक्सल काउंटर डिटेक्शन सिस्टमः

एक्सल काउंटर एक ऐसा ट्रेन डिटेक्शन सिस्टम है, जिसका उपयोग रेलवे सिग्नलिंग सिस्टम में, रेल ट्रैक के एक सेक्शन के दो बिंदुओं के बीच, ट्रेन की उपस्थिति है या नहीं, इसका पता लगाने के लिए किया जाता है। एक्सल काउंटर सिस्टम में, एक व्हील सेंसर होता है जो की मैकेनिकल या इलैक्ट्रिकल होता है।

एक्सल काउंटर व्हील सेंसर

एक सेक्शन के प्रत्येक छोर पर एक एक्सल काउंटर सेंसर स्थापित करके, एक्सल काउंटर प्रणाली को स्थापित किया जाता है। जैसे ही ट्रेन का कोई एक्सल, किसी भी एक्सल काउंटर सेंसर से गुजरता है, तब मूल्यांकनकर्ता, एक्सल को गिनता है और एक्सल काउंटर का काउंट एक बढ़त ले लेता है।

जैसे ही ट्रेन सेक्शन में समान एक्सल काउंटर सेंसर से गुजरती है, सिस्टम सेक्शन के अंत में गिनती की तुलना शुरुआत में दर्ज की गई गिनती से करता है। यदि दोनों गणनाएं समान हैं तो सेक्शन को क्लियर या ऑक्यूपाइड माना जाता है। ट्रेन की दिशा और गति का पता लगाने के लिए, एक ही एक्सल काउंटर सेंसर सिस्टम में, दो स्वतंत्र सेंसर शामिल होते हैं, जिससे एक्सल काउंटर डिवाइस, सेंसर के गुजरने के क्रम और समय के आधार पर, ट्रेन की दिशा और गति का पता लगाते हैं।

एक्सल काउंटर– कार्यात्मक सिद्धांतः

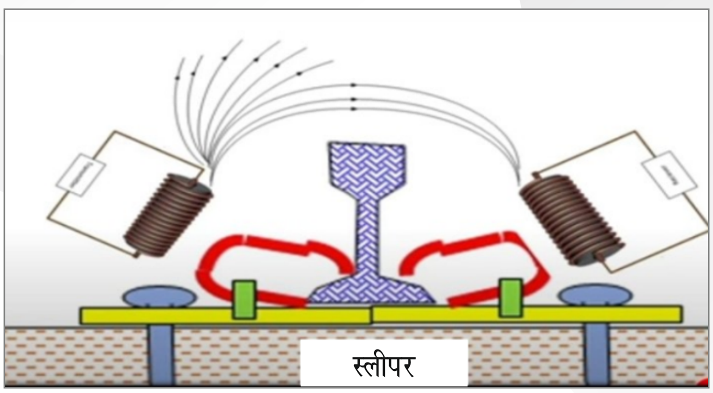

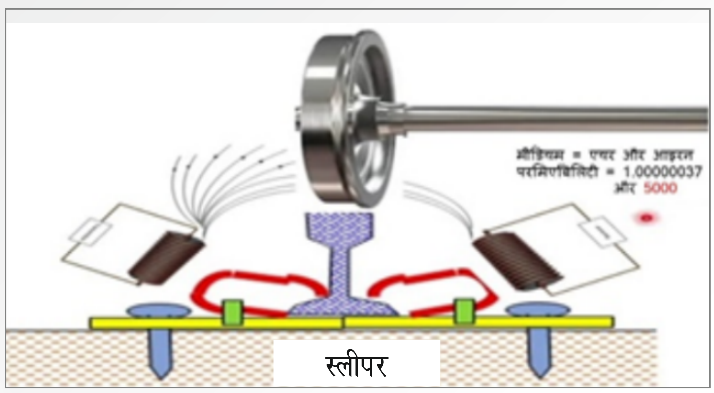

- एक्सल काउंटर का कार्यात्मक सिद्धांत, फील्ड लाइन विक्षेपण (deflection) पर आधारित है।
- एक ट्रांसमीटर कॉइल की चुंबकीय क्षेत्र रेखाएं, व्हील सेंसर हाउसिंग में, ट्रांसमीटर कॉइल के माध्यम से प्रवाहित होती हैं।
- ट्रांसमीटर कॉइल के ऊपर धातु वस्तु की उपस्थिति में, क्षेत्र रेखाओं के विक्षेपण के कारण ट्रांसमीटर कॉइल में चुंबकीय प्रेरण (magnetic induction) बदल जाता है।

इस प्रभाव का उपयोग ट्रेन के पहिए के व्हील फ्लैंज का पता लगाने के लिए किया जाता है।

- चुंबकीय क्षेत्र विक्षेपण के कारण वोल्टेज में आए परिवर्तन को मूल्यांकन बोर्ड (ई.बी.) द्वारा प्रोसेस किया जाता है और फिर एक्सल काउंटर बोर्ड (ए.सी.बी. बोर्ड) को दिया जाता है।

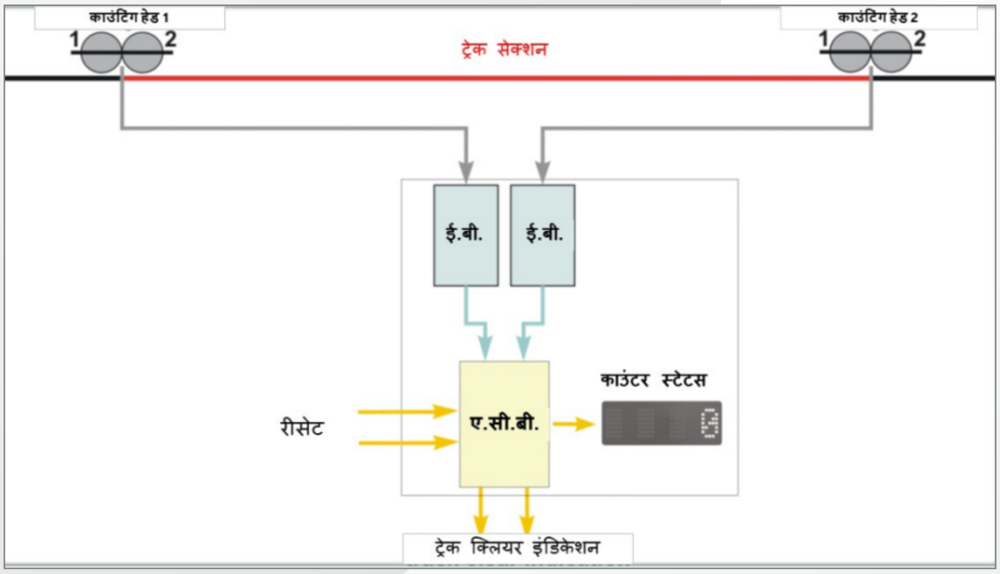

एक्सल काउंटर डिटेक्शन प्रणाली

- एक्सल काउंटर बोर्ड, एक रिले सर्किट के द्वारा फील्ड का स्टेटस सीबीआई या इंटरलॉकिंग को आउटपुट के रूप में प्रदान करता है।

एक्सल काउंटर डिटेक्शन प्रणाली के लाभ

- एक्सल काउंटर ट्रेन डिटेक्शन प्रणाली में पर्यावरण की स्थितियों का कोई असर नहीं होता है।
- इस प्रणाली को उन क्षेत्रों में भी उपयोग किया जा सकता है, जहां एसी ट्रैक सर्किट डिटेक्शन प्रणाली प्रयोग करने के लिए अनुकूल नहीं हैं।
- इस प्रणाली को कम बिजली की आवश्यकता होती है।
- इस प्रणाली के रखरखाव की आवश्यकता कम होती है।
- इस प्रणाली की जीवन चक्र लागत कम होती है।
- एक्सल काउंटर एक सेकेंडरी ट्रेन डिटेक्शन सिस्टम के रूप मे भी उपयोग किया जा सकता है।
- इस प्रणाली की जीवन चक्र लागत कम होती है।

कहाँ खो गई है आपकी मुस्कान?

ऐसा हो सकता है कि दुनिया में बोली जाने वाली हजारों भाषाओं में से आपको सारी भाषाएं न आती हों, पर मुस्कुराहट एक ऐसी भाषा है जो कोई भी बोल सकता है और हर कोई समझ सकता है। मुस्कान एक खुशी है जो एक से दूसरे तक फैलती है। आज के इस दौर में इंसान के पास सुख के सारे साधन मौजूद हैं लेकिन चेहरे से मुस्कान गायब हो गई है। एक प्रमुख समाचार पत्र में हाल ही में (16 मई 2023) प्रकाशित एक लेख के अनुसार महामारी के बाद जापान में लोग मुस्कुराना लगभग भूल चुके हैं और वे इसे फिर से सीखने के लिए 'हाऊ टू स्माइल' ट्यूटर्स की ओर रुख कर रहे हैं।

सारी सृष्टि में केवल एक इंसान है जिसे हंसने का गिफ्ट मिला है। रोना तो पक्षियों को भी आता है, बकरी रम्भाने लगती है, मछलियाँ सिसकियाँ भरती है पर उनमें से किसी को भी हंसने की ताकत नहीं है। केवल एक इंसान ही है जो बाहें फैलाकर हंस सकता है। फिर भी पता नहीं क्यों, वो हंसना भूल गया है और इसके मुख्य कारण है:-

1. **चिंताः आपकी मुस्कान खो गई है क्योंकि चिंता आपके मन में आ गई है**

   आपकी हंसी गुम हो जाती है जब कोई ना कोई चिंता आपके अंदर आ जाती है। आपको चिंता है जो है उसकी, जो बीत गया या जो आने वाला है उसकी। जबकि इन तीनों परिस्थितियों पर उसका कोई जोर नहीं है ।

   "जो बीत गया वो लौटेगा नहीं, जो है वो बदलेगा नहीं, जो होगा वो पता नहीं।" आप कुछ भी करते हो एक सहज सोच तो चलेगी ही पर सोच चिंता में बदल जाती है और चिंता आपकी मुस्कुराहट को छीन लेती है।

   चिंता को हटाएं, बस अपना कर्म करें, अपनी सोच बदलिए और मुस्कुराइए।

2. **डरः मुस्कुराहट कैसे आएगी जब डर की दीवार खड़ी हो जाएगी**

   अक्सर आपने सुना है डर इंसान का सबसे बड़ा दुश्मन है और उसने आपकी मुस्कान को कैदी बनाया है। जैसे दुश्मन आपको हथियार दिखाकर परेशान करता है। ऐसे ही मन डराता है। कुछ हो ना जाए........ कुछ खो ना जाए......कुछ छूट ना जाए........ और यही डर आपको परेशान करता है।

   एक छोटे बच्चे का दांत टूटता है तो वो हंसता है कि नया दांत आएगा क्योंकि जो गया वो उसके बारे में नहीं सोचता पर जो आने वाला है उसके बारे में सोचकर खुश है। होटल में जाते हैं, रहते हैं, खाते हैं, मौज करते हैं, हर चीज का इस्तेमाल करते हैं पर जब वापिस आना होता है तो वैसे का वैसा सब वहीं छोड़ देते हैं तो भी खुशी-खुशी अच्छी यादें लेकर घर आते हैं इस संसार में रहने की रीति भी यही है हर चीज का इस्तेमाल करो ठीक वैसे, जैसे कैशियर बैंक में कैश सम्भालता है पर अपना नहीं मानता है तो दुखी नहीं होता है।

   अन्दर के हर डर को दूर भगाइए और मुस्कुराइए।

3. **अहंकारः इंसान मुस्कुराता नहीं है क्योंकि अहंकार को ठुकराता नहीं है।**

   अहंकार हमेशा आपके आगे तुलना की तराजू रख देता है, जहां आप मुस्कुराते हुए भी सोचते हो, ये मेरे लेवेल का है तो मुस्कुराऊँ। स्टेटस सिंबल आपको मुस्कुराने नहीं देता। पर क्या कभी आपने विचार किया जब आप मंदिर में जाते हो तो भगवान की मूर्ति हमेशा मुस्कुराती हुई आपको मिलती है अब भगवान का ओहदा तो सबसे ऊंचा है फिर वो क्यों मुस्कुराते हैं क्योंकि मुस्कुराकर वो सबके गम छीन लेते हैं, सबके चेहरों पर भी हंसी ला देते हैं।

   कभी आपका अहंकार शब्दों से टकराता है। आप शब्द पकड़कर बैठ जाते हो और बहुत सारा वक्त उसी उलझन में निकाल देते हो। अपना मूड खराब कर लेना, चिड़चिड़ाना, क्रोध करना इन सबके बीच कहीं आपकी नन्ही सी मुस्कुराहट खो जाती है पर कभी अपना हठ छोड़कर, अहंकार छोड़कर किसी को प्यार करके देखो, कभी अपनी मुस्कुराहट के लिए मुस्कुराकर देखो। एक सुकून एक शान्ति मिलेगी जो हर ओहदे से बड़ी है।

   अहंकार रखकर अकेला होना अच्छा या हंसते, मुस्कुराते हुए सबको अपना बना लेना अच्छा?

   सोच बदलिए और मुस्कुराइए।

4. **नकारात्मक सोचः आप मुस्कुराते नहीं क्योंकि सकारात्मक नजरिया अपनाते नहीं।**

   जीवन के प्रति नजरिया क्या है ये बात भी आपकी मुस्कुराहट को प्रभावित करती है। हमारी नकारात्मक सोच हमें चिंतित बनाए रखते

हैं, अच्छी बात से भी कुछ कमी उठा लेना, हमसे हमारी हंसी छीन लेता है। आधा गिलास भरा देख लें तो हल्कापन महसूस होगा, तृप्ति महसूस होगी, धन्यवाद निकलेगा, आधा गिलास खाली देखते रहेंगे तो दुखी हो जाएंगे ।

आप सबसे अच्छे हो और आपको जो मिला वो भी सबसे अच्छा है ये नजरिया अपनाइए और मुस्कुराइए।

5. तुलनाः आप मुस्कुराते नहीं हो क्योंकि तुलना करना छोड़ते नहीं हो

जब आप किसी से तुलना करते हो तो या तो श्रेष्ठता में रहते हो या हीनता में। पर क्या आप जानते हो दोनों ही स्थिति में आप हंसी से कोसों दूर हो जाते हो? आप श्रेष्ठता में हो तो आपका अहंकार आपको रिलेक्स नहीं रहने देगा। जो रिलेक्स नहीं वो खुश कैसे रह सकता है? आपकी सादगी आपसे दूर हो जाती है और जहां सरलता नहीं वहां खुशी कैसे हो सकती है?

अगर आप हीनता में हो तो आपकी कमजोरी हमेशा आपको दुःखी रखेगी। आप हंसना भी चाहोगे तो मन के कमजोर विचार आपको और कमजोर करते जाएंगे’। जो कमजोर है वो शिकायतों से अपनी कमजोरी को और ढकता है। आपकी शिकायतें आपको हंसने नहीं देंगी । हाथ कभी टांगो से तुलना नहीं करते, यहां तक कि हाथों की पाँचों अंगुलियां अलग-अलग हैं तो भी किसी की आपस में तुलना नहीं है, सभी अपनी जगह जरूरी है। तुलना नहीं तभी एकजुट होकर कार्य करती हैं और आपकी शोभा बनती हैं।

तुलना मत कीजिए आप जो हैं भगवान की मर्जी है यही सोचकर हर पल मुस्कुराइए।

6. छोटी सोचः आप मुस्कुराते नहीं क्योंकि सोच को बड़ा बनाते नहीं

आपके विचारों की तंगदिली भी आपको मुस्कुराने नहीं देती हमेशा अपने बारे में सोचना । स्वार्थी होकर रहना, छोटा सोचना, ये सब हंसी के दरवाजे बंद करता है । आपने आजकल टी६वी६ में विज्ञापन सुना होगा, ‘पुश करो खुश रहो’। अपने विचारों को अच्छी तरफ पुश करके खुश हो जाओ । जिन्दगी में उतार-चढ़ाव, धूप-छांव तो आते ही हैं पर इन्हें पुश नहीं करेंगे तो कभी खुश नहीं हो पायेंगे । आप अगर रात भर जागते रहो और सोचो कि रात ठहर जाएगी, ऐसा नहीं होगा, सुबह तो आएगी। सुबह ठहरेगी नहीं, रात तो होगी। जीवन में परिवर्तन तो होंगे पर हम ठहर जाते हैं कभी विचारों के साथ, कभी हालातों के साथ, कभी शब्दों के साथ, कभी दुःखों के साथ पर स्वयं को अच्छी सोच की तरफ पुश करो तो मुस्कुराहट जरूर आएगी ।

विचारों को पुश करो, अपने को खुश करो।

विपिन तोमर
प्रबंधक/चल स्टाक

सुकून

अर्पण कर देते ड्यूटी पर जीवन
वो सुकून कहाँ पाते हैं
ये लम्हें फिर नहीं आते हैं।

युवा हैं कर्मपथ पर अडिग
बिना डरे बिना थके
पर पथ भ्रष्ट न हो पाते हैं
ये लम्हें फिर नहीं आते हैं।

परिवार के साथ जीवन की चाह
कोई दूर कोई पास छुट्टी की दरकार
बच्चे सयाने, पर सह न मिल पाते हैं
ये लम्हें फिर नहीं आते हैं।

कर्मठ कर्मी मेहनती लगनशील भी
तरंगे ताजगी लहरे तूफान समेटे जीवन के
संगी साथियों में जोश भर जाते हैं
सुकून के पल दे जाते हैं खुशनुमा बनाते हैं
तब ये लम्हें आते हैं।

कौशल कुमार गौड़
प्रधान अनुरक्षक/विद्युत एवं अनुरक्षण

मानव और रोबोट में अंतर

सभी जीवों में श्रेष्ठ मानव ने इस जगत में अपनी सत्ता स्थापित की है। आज मनुष्य ने अपनी चेतना और ज्ञान के बल पर अपनी आवश्यकताओं और सुख सुविधाओं की खोज में इतना तकनीकी अनुसंधान, शोध और विकास किया कि आज उसके पास एक स्पर्श से सारी सुविधाएं उपलब्ध हो रही हैं। मानव ने मशीनीकरण के जरिए छोटे से बड़े काम को आसान बना दिया है। आज मानव, रोबोट बनाने लगा है जो मानव के लिए प्रतिस्पर्धी ही नहीं अपितु उससे भी कहीं अधिक कार्यक्षमता युक्त, अथक और क्रियाशील साबित होता जा रहा है। मानव और रोबोट के बीच कई महत्वपूर्ण अंतर हैं। ये अंतर मुख्य रूप से उनकी उत्पत्ति, कार्यक्षमता, अनुभूति, और नैतिकता से संबंधित होते हैं।

1. **उत्पत्ति और संरचनाः**

- मानवः मनुष्य जैविक जीव हैं, जिसका निर्माण प्राकृतिक प्रक्रियाओं से होता है। यह पाँच तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, गगन और समीर से मिलकर बना होता है। मनुष्य का शरीर कोशिकाओं, ऊतकों और अंग प्रणालियों से बना होता है।
- रोबोटः रोबोट कृत्रिम उपकरण होते हैं, जिनका निर्माण मानव ने तकनीकी और इंजीनियरिंग प्रक्रियाओं से किया है। इनमें इलेक्ट्रॉनिक, धात्विक मैकेनिकल और सॉफ्टवेयर घटक होते हैं।

2. **कार्यप्रणाली और काबिलियतः**

- मानवः मनुष्य में सोचने की जटिल क्षमता और संवेदनशीलता होती है। ये अनुभूति, भावनाएं और स्वयं निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। मनुष्य अनुभवों से सीख सकते हैं और अनुकूलन कर सकते हैं। सृजनशीलता ही मानव को विकास के उच्च शिखर पर पहुंचाती है।

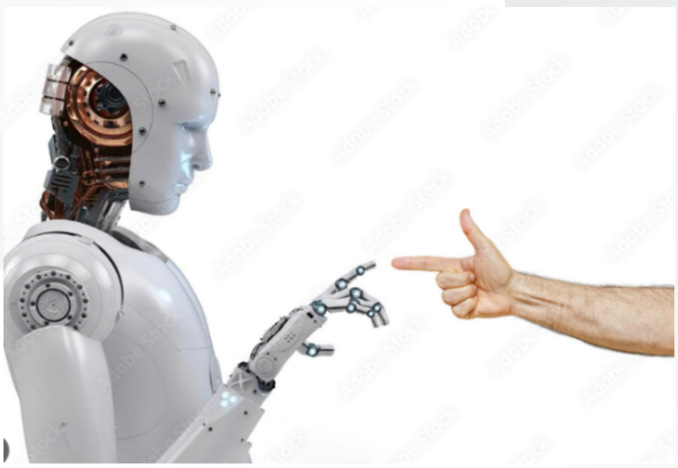

- रोबोटः रोबोट का कार्य उनके प्रोग्रामिंग और डिज़ाइन पर निर्भर करता है। ये विशिष्ट कार्यों को तेजी और सटीकता से कर सकते हैं, लेकिन उनकी काबिलियत सीमित होती है और वे अपनी प्रोग्रामिंग से परे नहीं जा सकते। हालांकि, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के माध्यम से रोबोट में कुछ हद तक स्वायत्तता और अनुकूलनशीलता देखी जा सकती है, परंतु यह मानव की तुलना में अभी भी सीमित है।

3. **अनुभूति और संवेदनाएंः**

- मानवः मनुष्य नैतिकता और सामाजिक मूल्यों को समझते हैं। उनके निर्णय नैतिकता, सहानुभूति, और सामाजिक जिम्मेदारी पर आधारित होते हैं।
- रोबोटः रोबोट भावनाएं नहीं महसूस कर सकते। वे संवेदनाओं की नकल कर सकते हैं, परंतु यह केवल उनकी प्रोग्रामिंग और एल्गोरिदम का हिस्सा होता है। वे वास्तविक अनुभूति या आत्म-जागरूकता से रहित होते हैं। वर्तमान में, कुछ रोबोट संवेदनाओं को महसूस कर रहे हैं।

4. **नैतिकता और निर्णय लेने की क्षमताः**

- मानवः मनुष्य सामाजिक और नैतिक मूल्य प्रणाली से प्रभावित होते हैं। उनके निर्णय नैतिकता, सहानुभूति, और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित हो सकते हैं। प्रकृति से उत्पन्न होने के कारण मानव में सभी प्राणियों के प्रति दया और करुणा का भाव होता है।
- रोबोटः रोबोट नैतिकता का पालन प्रोग्रामिंग के तहत कर सकते हैं, लेकिन उनमें नैतिक समझ और सहानुभूति की कमी होती है। वे नैतिक निर्णय मानव की तरह नहीं ले सकते।

अब सर्वश्रेष्ठ कौन है मानव या रोबोट

"सर्वश्रेष्ठ" का अर्थ संदर्भ और आवश्यकता के अनुसार भिन्न हो सकता है। हालांकि "सर्वश्रेष्ठ" मानव ही है जिसने रोबोट को बनाया है, लेकिन मानव और रोबोट दोनों की अपनी विशिष्ट क्षमताएं और सीमाएं हैं। इन दोनों की तुलना विभिन्न दृष्टिकोणों से की जा सकती हैः

5. **कार्यक्षमता और सटीकताः**

- मानवः मनुष्य कुछ कार्यों में रोबोट की तुलना में धीमे हो सकते हैं, लेकिन उनकी सृजनात्मकता, नवीनता, और समस्या समाधान की क्षमता उन्हें अद्वितीय बनाती है। मनुष्य की अनुकूलन क्षमता और जटिल सोचने की शक्ति भी महत्वपूर्ण है।
- रोबोटः रोबोट आमतौर पर विशिष्ट कार्यों में अधिक सटीक और तेज होते हैं। उनमें जो प्रोग्रामिंग की जाती है वे उसी के अनुसार अपना कार्य करते हैं। वे लंबे समय तक बिना थके काम कर सकते हैं और जटिल गणनाओं को जल्दी कर सकते हैं। उत्पादन और औद्योगिक

कार्यों में उनकी कार्यक्षमता अत्यधिक प्रभावी होती है।

6. **अनुभूति और संवेदनशीलता:**

- मानव: मनुष्य गहरे भावनात्मक और मानसिक अनुभवों से युक्त होते हैं। वे सहानुभूति, प्रेम, दुःख, और अन्य भावनाओं को समझ और महसूस कर सकते हैं। मानव के पास आत्म-जागरूकता और आत्म-चिंतन की क्षमता होती है। इसके अंदर आदर्श सेवा भाव होता है और मनुष्य और समस्त प्राणी के कल्याण की भावना निहित होती है।
- रोबोट: रोबोट भावनाएं महसूस नहीं कर सकते। वे केवल प्रोग्रामिंग के अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं और उनकी संवेदनशीलता सीमित होती है या होती ही नहीं है।

7. **नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी:**

- मानव: मानव एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहकर वह नैतिक जिम्मेदारियों को समझता है और उसे निभाता है।
- रोबोट: रोबोट नैतिकता का पालन केवल उनके प्रोग्रामिंग के अनुसार कर सकते हैं। उनमें नैतिक समझ और सहानुभूति की कमी होती है।

8. **अनुकूलनशीलता और सृजनशीलता:**

- मानव: मनुष्य में उच्च अनुकूलनशीलता और सृजनशीलता होती है। वे नई परिस्थितियों के अनुसार अपने आप को ढाल सकते हैं और नई समस्याओं का सृजनात्मक समाधान निकाल सकते हैं।
- रोबोट: रोबोट में सीमित अनुकूलनशीलता होती है। वे प्रोग्रामिंग के अनुसार काम करते हैं और नई परिस्थितियों में स्वयं को ढाल नहीं सकते।

निष्कर्ष: मानव और रोबोट के बीच कार्यक्षमता के अंतर के कई कारण हैं, जिनमें शारीरिक सीमाएं, गति, सटीकता, स्वचालन, अनुकूलनशीलता, और भावनात्मक और मानसिक पहलू शामिल हैं। रोबोट विशिष्ट कार्यों में अत्यधिक प्रभावी होते हैं, विशेषकर दोहराव वाले और सटीकता वाले कार्यों में। दूसरी ओर, मनुष्य की अनुकूलनशीलता, सृजनशीलता, और जटिल समस्याओं का समाधान करने की क्षमता उन्हें अद्वितीय बनाती है। दोनों की अपनी-अपनी भूमिकाएं और महत्व हैं। 'श्रेष्ठता' का निर्णय इस पर निर्भर करता है कि हम किस संदर्भ में तुलना कर रहे हैं। कार्यक्षमता और सटीकता के मामले में, रोबोट बेहतर हो सकते हैं। लेकिन अनुभूति, नैतिकता, सृजनशीलता, अनुकूलनशीलता और आदर्श भावना के मामले में मानव अधिक श्रेष्ठ है। मनुष्य ने ही रोबोट का आविष्कार किया है। दोनों की अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएँ हैं और वे विभिन्न परिस्थितियों में एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं।

नवीन कुमार बर्णवाल
सहायक सुपरिंटेंडेंट/डी.एम.आर.ए.

दिल्ली की जान है मेट्रो

प्रदूषण मुक्त, सुखद अहसास, जब चलती है मेट्रो।
हर जन की दैनिक आवश्यकता, बन गई है दिल्ली मेट्रो।

हर जन के दिलों में राज करती, उन्नत सुविधाएं देती।
हर मौसम में यह है चलती, भरोसेमंद सवारी देती।
उत्कृष्ट सवारी के लिए, हर वक्त तत्पर रहती।
सुरक्षा, समयबद्धता, गुणवत्ता का परिचय देती।।
आधुनिक तकनीक की, अनुपम, अद्भुत मिसाल है मेट्रो।
हर जन की दैनिक आवश्यकता, बन गई है दिल्ली मेट्रो।

ऐतिहासिक स्थल का भ्रमण करवाती है।
रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड से कनेक्टिविटी दिलाती है।
कम वक्त और कम खर्च पर, यात्रियों को पहुंचाती है।
महिलाओं, बच्चों, विकलांग, वृद्धों को, सुविधा देती है।
भारत के हर शहर में, फैलने लगी है मेट्रो।
हर जन की दैनिक आवश्यकता, बन गई है दिल्ली मेट्रो।

मेट्रो कर्मियों के लिए गौरव और गरिमा की मिसाल है मेट्रो।
वातावरण और यातायात के लिए लाभदायक है मेट्रो।
कर्तव्यबद्ध होकर कर्मी, कर्तव्य ईमानदारी से निभाते हैं।
मेट्रो की सुगमता और सुलभता, इनकी मेहनत और लगन से पाते हैं।
स्मार्ट शहर, स्मार्ट सुविधा, स्मार्ट सवारी के लिए बेमिसाल है मेट्रो।
हर जन की दैनिक आवश्यकता, बन गई है दिल्ली मेट्रो।

शशि कुमार जाटव
कनिष्ठ अभियंता

डी.एम.आर.ए. में 10वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी ने बड़े उत्साह के साथ 21 जून को 10वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। इसमें प्रशिक्षुओं और शिक्षकों सहित डी.एम.आर.सी. के लगभग 300 कर्मचारियों ने भाग लिया।

प्रबंध निदेशक, डी.एम.आर.सी., डॉ. विकास कुमार ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ाई और भारतीय शास्त्रों के उदाहरणों का हवाला देते हुए बताया कि योग किस तरह संतुलित जीवनशैली का समर्थन करता है। उन्होंने सभी कर्मचारियों से डी.एम.आर.सी. के विजन स्टेटमेंट "दिल्ली मेट्रो में यात्रियों को उत्कृष्ट यात्रा का अनुभव कराना" के साथ जुड़ने की अपील की।

समारोह की शुरुआत डीन/डी.एम.आर.ए. के स्वागत भाषण से हुई, जिसके बाद योगाचार्य द्वारा एक व्यापक योग सत्र का आयोजन किया गया। सीनियर प्रोफेसर/ सिविल (डी.एम.आर.ए.) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र का समापन हुआ।

अकादमी में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि समग्र स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को बढ़ावा देने के लिए डी.एम.आर.सी. की प्रतिबद्धता को बल देना था। डी.एम.आर.ए. अपने प्रशिक्षुओं और संकाय के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के साथ एकीकृत प्रशिक्षण प्रदान करने में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध है। इस वर्ष का अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह लगातार 10वाँ ऐसा उत्सव है। डी.एम.आर.ए. इस उत्सव को एक परंपरा बनाने के लिए तत्पर है, जो डी.एम.आर.सी. कर्मचारियों को स्वस्थ और अधिक संतुलित जीवन जीने के लिए निरंतर प्रेरित करता है।

डी.एम.आर.ए. द्वारा संकाय सदस्यों और प्रशिक्षुओं के बीच क्रिकेट मैच का आयोजन

शास्त्री पार्क में संकाय सदस्यों और प्रशिक्षुओं के बीच एक क्रिकेट मैच आयोजित किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य डी.एम.आर.ए. के संकाय सदस्यों और प्रशिक्षुओं के बीच टीम-भावना और सौहार्दपूर्ण वातावरण तैयार करना था, इस मैच में कौशल और खेल-भावना का उत्कृष्ट प्रदर्शन हुआ। कड़ी प्रतिस्पर्धा का प्रदर्शन करते हुए दोनों टीमों ने उत्साही दर्शकों के प्रोत्साहन के बीच उत्कृष्ट खेल दिखाया। अंततः कांटे की इस टक्कर में प्रशिक्षुओं की टीम विजयी रही।

डॉ. विकास कुमार, माननीय प्रबंध निदेशक/डी.एम.आर.सी. ने उपस्थित होकर इस आयोजन की शोभा बढ़ाई। उन्होंने दोनों टीमों की सराहना करते हुए टीम-भावना, निष्पक्षता, दृढ़ता और खेल-भावना की महत्ता पर जोर दिया। उन्होंने सभी के समग्र विकास पर बल देते हुए पाठ्येतर गतिविधियों के आयोजन के महत्व पर भी बल दिया।

दिल्ली मेट्रो रेल अकादमी
शास्त्री पार्क, दिल्ली–110053